

১২ নং ফাইল

24336631

26.04.2018

24 33 66 44

मात्रा H हा व, य लः

सहने हं प्रण रायः ।

वैदेशीकरण नाम से वर्द्धी रचित १५ मम्।

प्राप्तमाला रमाला द्य प्राप्तः परमो मम॥१॥

नाना वृत्तैर्निबद्धं स नमो मोहन मुत्तमम् ।

माना देशांतून शांत माना वृत्तसमाधुलान् ॥२॥

पाठ पाठ पाठ = यमे लज्जे व गृह्यति मे मनः ।

या प्रावृत्तान्तमाद्येष्टु मा व्यसेतन्मृषापते ॥ ३ ॥

नैव्या मव्या च श्रुत्यत्र भवतिः सगुणाः श्रिताः ।

५॥ ताल्य मे तदये मय्ये मयो वि. शिना -

Q. 4. ~~Q. 4. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838~~

वेदमी ही गोती सन्धम वागरी वागरी दिशायले

[illegible]

नामा ग्रन्थ इत्येतानि नामा देवैरुपनिषत्सु लक्ष्मणाः ।
-नामि यन्मि मि लक्ष्मणाः शिव-प्रतीकानि -
युक्तानि ॥ ६ ॥

सौम्याकारः सौम्यनाचो गुणगृह्यो विपश्चि लः ।

सदा सदा मन्दिराः सुन्दरप्रदेशेण बहो॥६॥

गुरुजीने सुट्टी द्या आहे त्याचो धर्म राखता

'हरि दत्त' कवि भूषा राजा माना गयी लखो।

समय वृत्तों में वाणी नोट्स में मिश्रणों की लक्ष्यितता

प्र.म./SPP/HYD-2015 पोस्ट कार्ड POST CARD

प्र.मु./SPP/HYD - 2015 पोस्ट कार्ड POST CARD

२३०

1

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

1

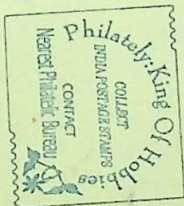
10

1

七

y,

Do not write or print below this line

 $(u, p.)$ 

स्त्री - २५४, डिपेंस फारोमी,

मई दि हली - ११००२५.

२५. ११. २०१४

मान्येषु उज्जलस्यः ।

दीपावलि शुभांशं स भवतिः प्रेक्षिता मयि ।

प्रमत्त नन्द सन्दोहं मम चित्तं स्मृति मयी जन् ॥१॥

प्रकाश पर्व तनु लाल

प्रकाशं जागती लले ।

व्यतीतु मेन मी सधना

मोहाय लस सच्छटाः ॥२॥

सौ हृदयं सौ मज्जस्यं

सर्वमूल दया लक्ष्मी ।

पदं दध्युद्धं लोके

शान्ति मेन विराजताम् ॥ ३॥

सौ मेन चक्षुषा नित्यं

दयाय लव नमो नमः नित्यम् ।

प्रलय ई कार्य मे प्रह्वः

शुद्ध रं लोचन शुद्ध रं ॥ ५ ॥

मेव न तः सुरेव मेध न तां

सुदुष्ट मक्काः स वा न च वाः ।

दीर्घमायु लोभ न तां च

सोमाया धि विव जि ताः ॥ ५ ॥

देव वाणी सेव मायाः

प्रह्व रं मान वा जि ताः ।

इत्येवो म्हा स मा जेन म्हा वा गुणारणैः स ताम्

म व तां जीव वा च विरुद्धा का क्य रं ॥ ६ ॥ म व रं स ताम् । ६ ॥
सुदुष्ट मक्काः स वा न च वाः ।

स ताम् प्रह्व रं शरिनी

II.M./SPP/HYD - 2015 पोस्ट कार्ड POST CARD

(सुदुष्ट मक्का के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

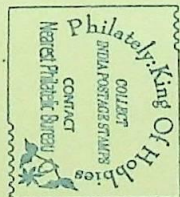
पिन PIN

3 0 2 0 1 7

जामपुर जमिपुर

जामपुर जमिपुर, जामपुर

जामपुर जमिपुर



(राजा रंभान)

भावाञ्जलिः श्री प्रारम्भमहाभागेन्द्रः समर्प्यते

प्रभोः स्वकीयं स्वलमित्युदारं
शुभं यशो ऽनन्यतमं दधानः।
नानानदीप्रस्रवणैः सुरम्भो
विभाति देशो भुवि केरलाख्यः ॥१॥

प्रवृष्टपद्मं बहु यत्र सख्यं
रम्यास्तिष्ठा शाङ्खलभूमिमागाः।
मन्दं प्रचान्तश्च यदीयवाता
प्रागन्तुकानां स्मरन्ति चेत् ॥२॥
प्रक्षालितो ऽम्भोनिधिर्वीर्यजालैः-
नेत्रद्वयासेचनको ऽतिहृद्यः।
विपाश्चिदग्न्या द्युषितो महान् मे।
चेतो ऽहर्द् देशविशेष एषः ॥३॥

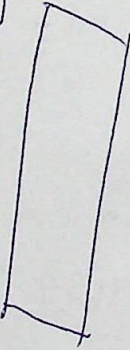
सत्यव्रत शास्त्रिणः

नव दिल्ली

14.05.2020

arsu saket @ yahoo.com

xxx 978 → 83.452
86.80862



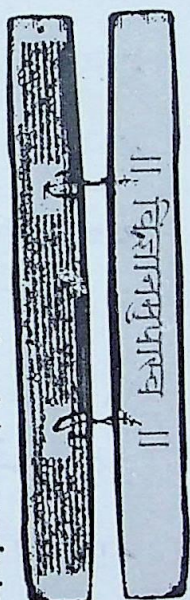
श्रीमद्भारवि कादशी

मानसारव्यं महाकाव्यं श्रीनारायणकाव्यैः ।
 सरस्वत्यास्तत्त्वभूते रात्रिं शुभमोहरम् ॥ १ ॥
 शुभमोहरं पाठं पाठं तृप्तिं विविक्तां ज्ञे हृदि ।
 वैलक्षण्यं किमप्यस्य यदि वाचाभगोचरम् ॥ २ ॥
 नानाऽत्र विख्याः सृष्टा अरुष्ट्याः पूर्व-शूरिभिः ।
 भूतानां भूतये ये स्युः-ज्ञानि-लेखनार्थं च ॥ ३ ॥
 रम्याऽस्ति पदबन्धोऽत्र रम्याशैली च प्रोदरा ।
 रम्यञ्च वर्ण्यो विषयः सर्वं रम्याभिप्रायस्य ह्ये ॥ ४ ॥
 अर्थस्य रमणीयस्य यो भवेत् प्रतिपादकः ।
 तं शब्दं काव्यशास्त्रज्ञैः काव्यं शैल्यं प्रचक्षते ॥ ५ ॥
 तदेतच्छ्लो-काव्यस्य प्रणेताः सुविश्रुताः ।
 हंसायनो कविश्लो-का विदुन्मागस-प्रानसे ॥ ६ ॥
 सर्गविन्धो महाकाव्ये-मेतत् काव्यस्य लक्षणम् ।
 अष्टसर्गान्तरत्वं च सरस्वतप्रचार्ये च ॥ ७ ॥
 तदेतत् सर्वथा काव्ये कविभिः परिपालितम् ।
 सर्गपञ्चदशी रम्या सुतराजत्र राजते ॥ ८ ॥
 नानावृत्तमयो बन्धो नानावृत्तवचोचकः ।
 वृत्तानां लोकयात्रायां साकृन्-प्रतिपादकः ॥ ९ ॥
 काव्येऽत्र दृश्यते हंसे वृत्तं येन हितं च्युकोत् ।
 वैद्ययन्नाशिका विज्ञातु-श्रीनारायणशास्त्रिणः ॥ १० ॥
 आकृष्टस्तद्-शुभ-शास्त्रे-गुणिनां अनुपादकः ।
 शास्त्री सत्यप्रतापयोऽहं वाचं स्वामुपसंहरे ॥ ११ ॥

उपेक्षामिनिवाज
 जामपुरे

दिनांकः ०२६

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन



National Mission for Manuscripts

National Mission for Manuscripts

ॐ

२०११

सम्मान्याः विद्यांसः

डो. सत्यव्रत रा. स्त्रियाः, मान्या। ऋषोदेवी च,

नमो नमः॥

शान्कर्म संस्कृतानि

सद्भावशेयितानि;

वर्षादिनन्दनानि॥

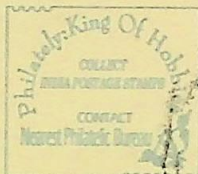
चन्द्रिकावासुदेवा

३५

डॉ. वासुदेव पाठक 'वामर्ध'
सहस्र-वर्षीय
अहमदाबाद - ३८० ०१५

०७९ १६७५५७५५

PHILATELY - 2015 POST CARD



मान्या:

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री जी.

C-१५४

जीफेन्स कॉलोनी

नई दिल्ली.

पिन PIN

1 1 0 0

(संकेत के नीचे न लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this)

प्रज्ञा

3377
22/10/2019

विद्या-वैभव-भवन

29-केसर-विहार

जमतपुर, जयपुर-302017 (राज.)

महामहनीय-माना

अथ सुधीन्दु-श्री सत्यव्रत-शास्त्रिणः॥

श्रीमृत-पादपङ्क्तयोः

प्रणमामि जैतः पुन्येन स्वर्गिनयं हि ॥

विश्वसिद्धि सपरिवाराय-

तत्र भवन्तो भवन्तः सर्वेऽपि ।

अन्ति कुशलिन एवात्र

परम-पितृ-परमात्मनोऽनुकम्पया ॥

सूक्ष्म-मात्र-द्वन्द्वयो-

श्चापि कृपया विनिर्देशा नितितिर्षे ।

प्रतिवर्षमिष लोऽयमपि

दीपोत्सवो भवतु भवद्भ्योऽभीष्टदः॥

रक्षते स्वास्थ्यं मनसि

प्रसन्नता च सदैव वेदिदालं वै ।

इदमेव मातृ-लक्ष्मी

पुनः पुनः प्रणिपत्य याचे भवद्भ्यः॥

संस्कृतयोग-परिणति -
 रथ या सर्वकाराय दत्तं हि चतुः ।
 कुतः सा प्राप्तव्याऽसि ?
 कृपयेदमपि सूच्यतां तावद् पक्षम् ॥

ऊनत्रिंशे केसर -
 विहारे जगत्पुरे जयपुरे नखी ।
 अद्यतनमस्ति अवदीय -

२५भासी:- सप्तमि सु-गणितकेंद्रः

२७/१०/२०१८
 दीपावली-पक्षिणि

प्र.मु./SPP/HYD - 2012 पोस्ट कार्ड POST CARD

(एक तार के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)
 No. 09655017463

पिन PIN

1 1 0 0 2 4

आई दि लली

म.म. रा.प्र.पति - स्व.प्र.मि.रा.
 पक्षमरणा - डॉ. श्रीजल -
 सत्यव्रतशास्त्री - चरणा.
 स्त्री - २४८, डिपेंस कोलोमी



५१६ ना राधणशोत्रिचाहरे मध्ये
प्रेषितं पत्रम् 29. 11. 20 19 दिने

मान्धा विहङ्गकः

सप्रणमं प्रणति ललाटम्।

दिना नि नाना विगतानि पत्रं

सत्तां मम प्राप्तवत्तराद्यादि।

तदुत्तरं प्रेष्ये मयेति नेत्वं

स. कि. : हुतागः अयि मर्जणीयः ॥ १॥

क्षमाधनाः साधुजनाः कदापि

क्षमास्वभावं न परित्यजन्ति।

अने हुतागस्यपि तेन

सत्ताः क्षमां याचितुमुद्यतोऽहम् ॥ २॥

अने के कामादिभिरुल्लेखितारुहः

अर्थं न विन्दन् अणमस्यहं भोः।

अनश्नन्त्येऽपि न चोदयिष्ये

दातुं ममः स्वं खलु पारयामि ॥ ३॥

चा मेन जीर्णो वयसा च वृद्धो

ग्रस्तश्च शोभो बहिर्मुखः प्रवृद्धोः।

अष्टाश्रितोऽहं चलिष्यामि

यथा यथाचित् सम्यं स्वधीयम् ॥ ४॥

सरस्वती वादयुगा वज्रपृष्ठः -

सिद्धा लारापनलत्तरोऽहम्।

अष्टानि सौक्ष्माऽपि शरीरजानि

मनःप्रसादं विसृजामि नैव ॥ ५॥

ग्रन्थाः अनेने ममकाऽज्जीता

भालेभु नष्टीभवता मेऽस्ति लोफः।

अथ लोफः परमं धनं मे

तेनैव धन्यं धलायात्पुष्टंस्वम् ॥ ६॥

इत्येव विद्याविमयेषु सत्सु
 वृत्तं स्वकीयं विमिषेत् नम्रं ।
 शिवं शिवानी च शिवं च मित्य
 सत्प्राथम्ये इह मनदेवोचितम् ॥६॥

प्रह्लादादासनाथकेतवो वासुदेवरेखादिभ्यः २३.११.२०१८ दिने
 प्रेषितं पत्रम्

मान्या निकटरेखा :

सप्रणमं प्रणलितलयम् ।

मूलनवर्ष शुभाशंखा भवन्ति प्रेषिताः प्रियाः ।

प्रमन्दानन्दसुन्दोहं मम चेतस्यजीजनम् ॥१॥

वर्णावलीपुरगता विस्तृता भवन्ती

दिल्ली-पुराधिकरमणेश्वर भवति योऽहम् ।

स्नेहस्तथाऽपि हृदयं कथमावये यो

वेदनाति तौ प्रति ह्ये महिनाऽस्ति गिरामगम्यम् ॥२॥

मूलनवर्ष शुभं भूया दुःखोपेक्षि सुखप्रदम् ।

भवन्तीमिति सत्प्राथम्यं वानं स्वामुपसंहरे ॥

विद्वद्भिद्योऽहं

सत्यव्रतः शारङ्गी

The bow from which he shot the arrow was made of a rabbit's horn, its string was made of a tortoise's moustache while the arrow was made of a special kind of reed. Due to the impact of the arrow kokhanak

॥ श्रीः ॥

विद्या-वैभव-भवन

29-केसर-विहार

जयतपुरा, जयपुर-302017 (राज.)

७३२३
३-११, २०१८

दोपावली-महोत्सव,

सख सिध्यतु तत्र भवते भवते ।

सकुटुम्बाय मोदकः ,

कामये तदिदं मान्याः ! सनमनश्च ॥१॥

शारीरं मानसं च ,

पुनः स्वारस्यं तिष्ठतु सारोप्यकम् ।

यशः प्रतिष्ठा मानः ,

प्राप्येत सकलमेतत् सततमेव ॥२॥

सृष्टिर्भवतु कडला ,

महाद्यन्ता नहि कदापि प्रकाशताम् ।

लगतु मनो भवेच्चरे ,

परोपकारे च रतिः प्रवर्द्धताम् ॥३॥

ऊनत्रिंशो केसर - ,

विहारे विद्या-वैभव-भवनेऽत्र ।

जयपुरारख्या-जयपुरे ,

वाशी कौशिक-कुल-किङ्कारः ॥४॥

आयमहमरिजि विनीजो,

भक्तिय-शुभाशी-राशि-सभीप्युः।

हार्द स्व सुपसंहरन्,

प्रणमन् नमोऽर्पणमस्तु ॥५॥

प्र.मु./SPP/HYD - 2012 पोस्ट कार्ड POST CARD

(This stamp is to be pasted on the right side of the card. Do not write or print below this line)

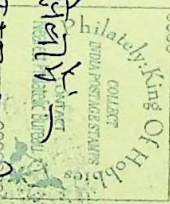
1 0 0 2 4

नमोऽर्पणमस्तु

प्रणमन् नमोऽर्पणमस्तु

सी-२५४

परम-पूजनीय डॉक्टर
श्री ० श्री स्वामीजी महाराज जी
(पद्मभूषण), रायपुर-समाधि मनीषी



अयि परम-काङ्क्षे, महाजहिम-सङ्गपति-सम्पत्तिनाः ।
 पञ्चश्री-विभ्रविताः, सत्यव्रतशालिफदाः! प्रणमामि ॥१॥
 सपरिवारा भवन्तो, मन्ये सर्वथा सङ्गशलाः स्वस्थाः ।
 सारस्वत-कोषमथ च, स्वामूल्य-कृतिभिः प्रयन्तः स्युः ॥२॥
 एकोनविंशत्युत्त-र-विंशतिलभ एष विश्व-माजितः, ।
 स्वैष्ट्याब्ध-करोत्वनिश-मिह भवतामपि सङ्गुट्ठानां शम् ॥३॥
 प्रज्य-भार-चरणेभ्यः, सादरप्रसङ्गीय-नतयो विनिवेद्याः ।
 भवदीय-शुभाशिसक्तु, सततं हि सत्य-जनता कामयावहि ॥४॥
 वाञ्छाया विगताब्दे, नैव सिद्धाः केनापि हेतुनाऽत्र ।
 अस्मिन् वृत्तेऽब्दे तु, सिद्ध्यन्तु ता भगवन्-कृपया ॥५॥
 स्वास्थ्यं तिष्ठतु सम्पत्, सदा मनसि प्रसादः समुल्लसतात् ।
 प्रसेपकार-वृत्तिश्च, नहि कदापि ह्येतान् सुखशान्तिदा ॥६॥
 उदेतु मनसि सद्भाव, उपकारेषु येन प्रवर्त्तते नित्यम् ।
 मिलेन्न येन दुराशीः, दीन-दुःखि-जनस्य हृदयतो निःसृता ॥७॥
 परमपितृ-परमेश्वरे, शुक्लेन्दुरिव रागोऽत्र विवर्द्धिताम् ।
 सद्दृष्टिर्न्यासस्तु न, प्रतिपदं तदास्ति त्वमनुभूयेत ॥८॥
 धनागमो भवतु तत्रा, यथात्र महार्घता प्रवाधनो गहि ।
 प्रष्टाचार-मूलं तु, करीवर्ति सैव महार्घता ॥९॥
 मनोदुष्ट्यैव लोकोः, प्रवर्त्तन्ते नाना प्रष्टाचारेषु ।
 मनसाः शोधकचेनं, संस्कृतमेव करीवर्ति केवलम् ॥१०॥
 शिक्षित-संस्कृतो जनो, न प्रष्टाचासी न चोत्कृष्टः ।
 दृष्टः श्रुतो वञ्चितो न कुत्रापि केनापि कदापि स न ॥११॥
 किन्त्वनिर्वाह-रूपेण, संस्कृतं नहि शिक्षयेत् सर्वकारेण ।
 हा हन्त! सर्वकारे, सद्बुद्धिः कदा समुदेष्यति गुरुदेव! ॥१२॥
 पुनः पुनश्चेतितोऽपि, यदि सर्वकारः स्वं नहि सम्भालयति ।
 नहि तत्कृत-दोषजो, दाडः किं न सर्वैरुपभोक्तव्योऽस्ति ॥१३॥
 सर्वकाराय वितरतु, सद्बुद्धिं परमपिता परमात्मा ।
 तदैवात्र जगतायाः, सर्वविधं कल्याणं सिद्धं स्यात् ॥१४॥
 प्रणष्टं विचिन्त्य नहि, वर्त्तमान-संरक्षणे देयं ध्यानम् ।
 भविष्य-विचिन्त्ये किं, वर्त्तमानममूल्य-जीवनं विनाशम् ॥१५॥
 जने जने भावनेयमिह यदि जायेत किं न तर्हि कान्दिष्टे ।
 लभ्येतां सुख-शान्ति, पृथ्व्यतां स्वीय एवात्माऽविलम्बिताम् ॥१६॥
 सर्वेषु स्वमवास्थित, मित्र यद्यनु को भवीताद् समुल्लसः ।
 तद्यपि किं तस्मै भोः, सुखं शान्तिर्न प्रेलिख्येते ॥१७॥
 किन्तु न इदमनुभवितुं, प्रयत्नं करोति समुल्लसः ॥१८॥
 अत एव सुख-शान्तिः, सदा स तिष्ठति वञ्चितो जीवने ॥१९॥
 सैव स्थितिरस्माकं, यथा नहि स्यात् तथा प्रयतनीयम् ।
 इत्येवास्मान् सम्प्रति, शिक्षाधितुमागतोऽयं नववर्षः ॥२०॥

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

7336

से कापै -

डॉ० श्री सत्यव्रत शास्त्री जी

C-248 डिफेंस कालोनी

नई दिल्ली - 110024

(इस साहय के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line) पिन PIN

दूसरा भाग SECOND FOLD

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

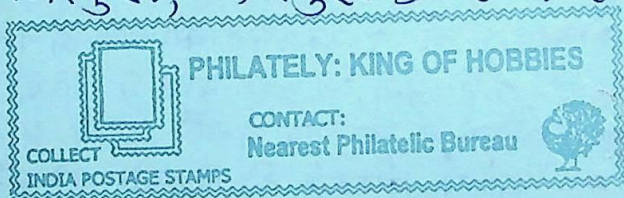
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

नारायण कांडेर

विधावेजल भवन,

29 केसर विहार,

जगतपुरा, जयपुर-302017 (रज.)



यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

ऊनीत्रिंशे केसर - विहारे विधा-वैभव - भवनेऽत्र ।

जगतपुराख्य - जयपुरे, वासी कोविद - कुल - किङ्करः ॥२॥

एवं सकुटुम्बेभ्यो, भवद्भ्योऽपि नव-रखैस्त - वर्धयै ।

सप्रणति शुभं विनिवेद्य, किमिति नारायण कांडेरः ॥२१॥

१-१-२०१८

योग नाशिष्ठ मायायाः सर्वदृष्ट्या विवेचनम् ।
 ग्रन्थे लुप्तो मया पलायि नोयाय विवादिताम् ॥ १ ॥
 पठित्वा ग्रन्थमेतं मे स-लोषो यदि सन्मवेत् ।
 योऽयमस्य रत्नस्य यत्नः स्यान्मे फले ग्रहिः ॥ २ ॥
 यत्नः फलेन संयोज्य शरी-भावे नृणां वचः ।
 तस्य सत्त्वविवेके न सन्देहोऽस्ति यदायम् ॥ ३ ॥
 नागा नृपतिर्ग्रन्थेऽत्र परिश्रान्तं मयाऽनिशम् ।
 तस्यैव फलमेतद्विदुर्ग्रन्थोऽयं विनिर्मितः ॥ ४ ॥
 मूयान् यो लो मया ग्रन्थ रचयामासि यत्नम् ।
 ते म नहि स-लोषं पश्यन्तीति न त्वा ॥ ५ ॥
 नास्ति लोको धर्मं सादृष्टं स-लोषेण समं भवेत् ।
 यदि येन मम विश्वासं सत्तं दृढतरं मम ॥ ६ ॥

यावज्जीवं मया श्रमस्तत्रैव परिशीलितम् ।
 स एवास्ति विमोदो मे तत्रैव तमसं मम ॥ १ ॥
 एते वाचिन्ताविरोधितो रदितोऽस्वित् न एम केः ।
 ह्येति पुण्या तमविमोऽयं सङ्गतिं यामि मेऽनिशम् ॥ २ ॥
 नास्ति पुण्यं तारं धर्मं सत्त्वङ्गं दिव्यं निश्चितम् ।
 तत्रैव सति सत्तं तमोऽस्तु तारं श्लाघितो बोधोऽयम् ॥ ३ ॥

संति। लपि सी - 243. डिपेंस चालेनी,
दिनांक 17.05.2018 नई दिल्ली - 110024.
26.04.2018

मान्या महाशय नमः
[सन्नेहं प्रणमः]

वैदेशिका एन नाम भवद्गी राचितं शुभम्।
वाच्यरत्नं 14 भाग्याय प्रमोदः परमो मम ॥ १ ॥
नाना वृत्तैर्मिथैः खलना वृत्तावकोचकम्।
विदेशायां चाप्येषु वाच्यमैतन्मृग्यते ॥ २ ॥
नानाग्रन्थेषु तेषां नानाशास्त्रविषयकाः।

वृत्तानां देशा एता नानाविधैर्मिश्रिताः ॥ ३ ॥

न खलित् बहुवो लोके भवद्गीतुं नुकोत्तमाः ॥

नास्ति येषां पंथाः काये जारासरज्जं मम ॥ ४ ॥

प्रमोदनामिहो ज्ञेयं श्रुतेन बहुना तदा।

सांस्कृतं वाङ्मयं खलित्मिवोत्पद्यते ॥ ५ ॥

स्वमेवोपबृंह्युत्तमाभिः कुलीमेवुधत्ते।

इत्येवमर्थये प्रहृष्टः शङ्करे लोकवाङ्मयम् ॥ ६ ॥

रतदित्य

प्रमोदीरितेयन्दमेव फलदासो विशो ज्यते।

भवामिहपि चाप्येषु रीतेः स्वरीयेष्विदं ज्ञेयम् ॥ ७ ॥

लोकास्ति रसनिपयन्दरलेषु कोऽपि विलासकाः।

प्राजगति यत्पत्तं गुणगुह्यमनंदि यद्व ॥ ८ ॥

इत्यावचेमं भवत्तं प्रशोऽस्तु वृत्तिवीतले।

स्वास्थ्यं च दीर्घमायुश्च लोभं चापि मिरत्तत् ॥ ९ ॥

धर्मपान्यस्तमृष्टश्च सौमनस्यं च वन्द्यम्।

इति सप्तार्धं लोकेशं वाचं स्वामुक्तेः हरे ॥ १० ॥

भवद्गीतावाङ्मयं वार्जितं हृदयोऽहं

प्रोचामि हरिदत्तशशि ॥

स रम्यतः शरणी

दिनांक

सत्यव्रत - श्रीयुत - शास्त्रिपादा, दीपावली - पावन - पर्वणीह ।
 शुभाशिक्षोऽर्थी विनतः सहस्रं, पादाब्ज - युग्मं भवतो प्रणौमि ॥१॥
 प्रणौमि नित्यं च द्यापयं मां, उषां प्रदीयां विदुषीं सुहासाम् ।
 नात्यल्यमूर्तिर्नयि सेयमात्म - शुभाशिक्षो वर्षेभ्यः श्रीभ्यः ॥३॥
 दीपावली - पावन - पर्व मात्या, लक्ष्मी - कृपातः शुभदं सद्यः स्तु ।
 स्वास्थ्यं समृद्धिं मित्रात् प्रकामम्, आयुस्थमाप्तेन सुदीर्घमेव ॥३॥
 महार्घतातो मिलताद् विभुक्तिरु, न कोऽपि कञ्चित् तुदात् कदापि ।
 जीवन् सखौहर्दयं नृलोक, आतङ्ककार्यं त्युतादि सद्यः ॥३॥
 आतङ्कः स्योऽस्ति न शान्तिरायी, सुखं जनानां हरते स सद्यः ।
 निर्दोष - इत्या - जनिताश्च दोषो, लोकद्वयं जायते सदैव ॥४॥
 आतङ्कमूलं मनसः प्रदुष्टिः, रुद्धयेन्नरः केवल - संस्कृतेन ।
 प्रशासनं संस्कृत - विहाणं वा, हते समेवोऽप्यनिवार्यतो न ॥५॥
 वा । प्रष्टिताश्चापि प्रशासनं न, नाध्यं प्रकुर्वन्ति तथा विधानम् ।
 तैव सर्वत्र वरः प्रदुष्टिरु, नाना - दुराचारिणिह ससुते ॥६॥
 आस्तां गदेतद् भवतीह तत्तु, वैवश्यतः किं नहि सद्यमस्ति १ ।
 अस्थोपचारो नहि दृश्यतेऽन्यः, प्रचारतः संस्कृत - वडः नमस्य ॥७॥
 स्वकीय - दन्ता हि दशानि निर्वो, दोष - परस्मै कथमस्य देयः १ ।
 भोग्यं तु तत्सर्वं हि दशानि नृणः, शुभाऽशुभं भक्तुतमात्मना ॥८॥
 प्राप्ते प्रसङ्गे स्वजनेषु मान्या, भवत्यु हर्दः प्रकृतीकृतः स्वः ।
 प्रीतिः स्ति कञ्चिद् भवतामनेन, भावे शर्मा तद् हृदयेन श्री ॥९॥
 प्रेम्णा, प्रदीपो ज्वलतात् सदैव, निर्वर्णिमायात् न जागृमस्य ।
 सारोग्य - क्षीयतिरु वाप्य सर्वः, सुखी समृद्धौ भवतात् सदैव ॥१०॥
 फले च्य फुल्लेन सन्मलोऽपि लोको, यच्चापि लिप्सेत शनिद्वतो वै ।
 इत्येव याचे हृदयेन लक्ष्मी, यिष्णुप्रियां मां करुणानिधिं भोः ॥११॥
 अनर्पिते केशरः, विहारः, विधावैभव - भवत्यु त्र ।
 जगत्पुत्रस्य - जगदुरः, वासी कोविद - फुल्ल - किङ्करः ॥ १३॥
 निवेद्यैवं स्वहर्दं, सन्नुमानं भवत्यु सुभीकरेषु ।
 विरमयति स्वलेखनी, प्रणम्य नमोऽस्तु नमोऽस्तु ॥१४॥

३०/१०/२०१६



सेवा में -
 श्री युत परमादरणीय
 ज्योत्सव सत्यव्रत शास्त्रीजी

एसी-248 डिफेंस कालोनी
 नई दिल्ली

न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line पिन PIN

110024

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

नारायण बाबू
 विद्या-वैभव-भवन
 जगतपुरा जलपुर-302011 (राज.)



PHILATELY: KING OF HOBBIES

CONTACT:
Nearest Philatelic Bureau

COLLECT
INDIA POSTAGE STAMPS



यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

मार्च 54 2010

॥ श्रीः ॥

(१)

पद्मभूषण-भूषिताः, समाह्वयः परमश्रद्धयाः शुद्धिः ।

नमोऽसि भवदुग्ध आर्या, प्राक्तर-श्रीसत्यव्रतशास्त्रिणे मे ॥

(२)

आशासे परिवारे, कुशलमेव वर्तते सर्व-प्रकारकम् ।

पूज्या मे मातरोऽपि, सर्वथा स्वस्थतया एव मोदते ॥

(३)

अत्रापि कुशलं, किन्तु, पत्नी-परलोक-प्रयाणेन स्वप्न ।

शिथिल-शिथिलमिव शून्यः, ज्यानुबोभवीमि सुकुटुम्बः ॥

(४)

तद्-देहोऽत्र मेडिकल-कालेजे दत्तः शिक्षार्थुपयोगाय ।

ममापि देहं तथैव, दानुमादिष्टवानस्मि स्वकुटुम्बम् ॥

(५)

सात्वासीद् मम परमा, शक्तिरधाङ्गिनी गृहलक्ष्मीर्धन्या ।

तस्यां विन्यस्त-भार, एवाहमियानभूवं किञ्चिज्ज्ञ इह ॥

(६)

परं वा ! सम्प्रति तु मां, समय एवकलवान् कुर्वीत सक्रियम् ।

निराशमेवान्यथा तु, मम्मन्ये शरीरेण मनसा च स्वम् ॥

(७)

सत्यं लिखामि साऽऽक्षी, सहयोगिनी मे सदोद्याता ।

रुग्णावस्थाया अपि, सा मां निःस्वार्थमखेत मातेव ॥

(८)

किन्तु वा हन्त ! सम्प्रति, तत्संजाते वञ्चितोऽस्मि हतभाज्यः ।

सत्यमेव विधुरताऽत्र, साक्षादनुभावयति पत्नी-महताम् ॥

(९)

इहं नु गृहिणी-हीनं, रमश्चानमिवानुभूयते शून्य-शून्यम् ।
विधुर-स्थिति रिवं यदा, तदेतोऽति विधवा-स्थिति रस्तद्-वेद्यैव ॥

सक-चक्रे निगति, ^(१०) किमुपयोगार्ह तिष्ठति द्विचक्रिका ?
सेयमेव स्थितिरस्ति, दम्पत्यारेकस्मिन् मृते शिष्टस्य ॥

अस्तु तावत्, संस्कृता-^(११) योग-प्रश्नोत्तराणि प्रेषयाप्रि समम् ।
सारं सारं स्वेष्टं, गृहान्तितस्तु यथा हंसः पयोऽकथः ॥

^(१२) पुनश्च सर्वकाराय, यत् प्रतिवेदनं प्रदा रयते भवतिः ।
उत्तर-दाहभ्योऽपि च, तत्प्रति-दानाय वाच्यः सर्वकारः ॥

^(१३) प्रश्नोत्तर-प्रेषणेऽथ, विलम्बो यः कोऽप्यभूद् विडड्योः ।
क्षमन्तं तं नु कृपया, क्षमिक-प्रविष्टो हि स्वाध्वो विश्रुताः ॥

(१४-१५)

ऊनमिंशे कैसर-विहारे विद्या-वैभव-भवनेऽत्र ।
जगत्पुरारव्य-जयपुरे, वासी भवदीय-लुपेच्छुकः ॥
इति सविनयं स्व-हृद्, भवदीय-श्रीपाद-पद्म-युग्मे ।

सनति विनिवेद्येहैव, विरमति गोपकककरः

१३/१०/२०१४

चल दूरभाषः—

८७ ८८-२०४६-२८

विद्या-वैभव-भवन

29-कैतर-विहार

जगदपुरा, जयपुर-302017 (राज.)

मो. 9799204628

7055
3. 2/3

दीपावली-पावन-पर्वकाले, सत्यव्रताः शास्त्रिवराः सुधीन्
समाह्वयन् भो भवतः प्रपूज्यात्, वन्दे मुदा हं सकुडम्ब एव ॥
महाधनया विकसलकाले, संजीवि तुं मा कर्मजा कृपालुः ।
पथसि वित्तं धनधान्यरक्षि, समस्तलोकाय दद्यात् सदा ॥
विकार्यतातो नहि कोऽपि दुःखी, तिष्ठेन्निराशश्च भवेन्न जागृ ॥
लक्ष्मीर्मुदा ते कृपयात् स्वयं हि, वाञ्छाम्यहं भो स्तदिदं संदेवं ॥
सर्वजनार्थजिगीषातीह सूतं, हरि प्रतेवेति वदन्ति सर्वे ।
हारिद्रव्यं प्रस्मान् नहि कोऽपि ज्ञातुं, लभेत्तलक्ष्मीं नृपकृते वशिष्ठे ॥
एकत्र लक्ष्मीः स्वयमेव याति, परत्र सा याति न प्रार्थिताऽपि ।
वैधर्म्यमेतद् भ्रम मानसं तु, दुनोति लक्ष्म्याः करं वै किमत्र ॥
सर्वेऽप्यनर्था मनसाः प्रदूषणाद्, भवन्ति किं नेति कृपाव्रतीपि क्रि ॥
प्रदूषणो न्युक्तमनो यदा लुप्तः, भवेत्तथा मा कर्मला करोत्विर ॥
आनन्दः भीत्या नहि कोऽपि साध्यते, हुरवेन शते धर्मिकोऽपि हन्ता ।
आनन्दः मेतं प्रसृतं हि विष्टपे, सद्यः समुन्मूलयताद् हरिप्रिया ॥
प्रशासनेनापि तथा हि शीघ्रं, नीतिः स्वकीया परिचरनीया ।
धनी यथा स्यादधिको धनी न, तिः स्वोऽपि न स्यादधिकश्च निःस्वः ॥
किं वाञ्छितं मे सकलं भविष्यति, पुनः पुनः संशय एव जायते ।
दीपावलीषु यत ईदृशं पुरा, नानाज्जितं मे फलितं कदाचन ॥
अगशा न शक्या परमासि हानुं, यतो हुरन्ताऽस्ति लदेयमत्र ।
अगशामतोऽहं विदधामि लक्ष्मीर्, वाञ्छामि मां पूरायताधुना मे ॥
सारेऽयं मायुर्लभतां सुदीर्घः, समाह्वयन् भो, सकुडम्ब एव ।
हरेः कृपा लक्ष्मीया, नृपकृते वशिष्ठे ॥

मा शारदा चापि भवत्यु मान्वाः संरक्षतात् स्वीय-दमादृशं हि ।
 ततो भवन्तोऽविरतं मञ्जीरं, निमज्जन्तु साहित्यमिहोपकारि ॥
 साहित्यमेवैकजर्म सदैव, चिरायुष्यं रक्षति नूनमेव ।
 निमलितरत्नत्वाच्चैव लक्ष्मीं, सुदूरदक्षीं प्रथमं मनस्वी ॥
 न्नीमत्यु किं वाऽति निवेद्यमत्र, स्वयं भवन्तो विविदन्ति सज्जम् ।
 भवत्युते नै विनिवेदनं तु, श्रूयसि दीपस्य शदक्षिणं हि ॥
 — पुण्यकम् —

ऊनाकिंशो कंसरः, विहारे विद्या-वैभवं-भवनं ५ त्र ।
 अगत्पुण्य-अश्वपुरे, निवासी भवत्युपाका हुनी ॥
 स्वहृदि निवेद्य भवति, सम्माननीयेऽद्य दीपावल्यां ।
 स्वकाचमुप संहरते, पुण्यम् नोपेक्ष्य कलकलं ॥

३१९१८०९३

(या तावत् के नो न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

पिन PIN

710024

मई दिवसी

सी २५४
डिफेंस क्लोनी

जी



सामान्याः सत्प्रयुक्त शास्त्रीयार्थाः
 मान्या उच्चावर्था, परिवारम्,
 नमो नमः।

सद्भाववर्धनार्थम्,
 सद्धर्मपालनार्थम्,
 नात्थैव जीवनार्थम्,
 संस्कार संस्कृतार्थम्,
 राष्ट्रस्य गौरवार्थम्,
 जैलोक्यमङ्गलार्थम्,
 विम्वरे सुखार्थम्,
 वर्षाशिवन्दनानि ॥ ---

इष्टप्रसादाद्

भवतात्प्रसादः ॥

चन्द्रिकावासुदेवौ.

आराम की नि काव्यम्

पठ्यते सायं

भक्तिभावतः।

अत्रिवन्दनानि पुनः पुनः।

व्युत्पद्यते।

प्र. चन्द्रिका पाठक

डॉ. वासुदेव पाठक 'वागर्ध'

354, शरस्वतीनगर

उमदुमदाबाद- 15. गुजरात

फोन-079 26745754

INR/SPP/HYD - 2012 पोस्ट कार्ड POST CARD



मान्यवर श्री.

डॉ. शरद्व्रत शास्त्रीजी

C-248,

डीफेन्स कॉलोनी

नई दिल्ली.

पिन PIN

1	1	0	0		
---	---	---	---	--	--

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

(१)
दीपावली-पर्वणि पूज्यपादाः ! समाप्तकार भोः यमुदुम्ब एव ।
नमामि सप्तद्वयं महं भवद्भ्यः, शुभाशिषां राशिभवाप्तुमिच्छन् ॥

(२)
समाप्तकाश्चापि भवन्त आर्याः !, शरीरि कं मानसिकं च सर्वम् ।
स्वास्थ्यं वहन्तो मुदमाप्नुवन्तः, सुदीर्घमायुः सुधियः स्वदत्ताम् ॥

(३)
व्याधिश्च नृणां हृदयान्धकारं, सन्नेम सर्वान् मिथ आनयन्ती ।
प्रमोदयन्ती भृशमेव भूजं, दीपावलिर्मेद्गुलाभातनोतु ॥

(४)
महाचरिता नश्यन्तु साण्ड-हर्षा, न भूषण-इत्या भवताम् कदापि ।
नातङ्गितं कोऽपि करोतु कञ्चित्, सर्वे प्रसन्ताः सुखिनः सदा स्युः ॥

(५)
बलात्कृतिः स्त्रीषु कदापि न स्याद्, जने जनेताः इति मातृ-भावः ।
स्वसु-स्नुषा-स्वीय-सुता-सुहृष्टिर्, जागर्तु लोकद्वय-साधिकाऽऽशु ॥

(६)
मनो विशुद्धं भवतात्समेधां, यतः प्रवर्त्येत न पाप-कृत्ये ।
मनो विशुद्धं भवतान्न तावद्, यावन्न पाप्मेत च सेस्कृतं हि ॥

(७)
न कोऽपि कञ्चेत कदापि केन, कञ्चिन्न कश्चित् तुरतात् कदापि ।
परस्परं प्रेम धरन् सदैव, सुरवी सप्तद्वौ भवतात् प्रसन्नः ॥

(८)
इत्यादिकाः सन्ति प्रदीय-काभनास्, तासां सकारां लघुषत्रकोऽत्र तु ।
चर्चा कथं वै करवाणि कोविदाः !, कमप्युपायं न विलोकयामि ॥

(९)
परन्तु किं तत् कलितं कदापि, यद् वशिष्ठ प्रत्यब्दमहं तदित्यम् ।
उदेति प्रश्नो मम मानसेऽयं, यतोऽफलत् प्राज्ञं मनोस्थो मे ॥

(१०)
आशा न शक्याऽस्ति परं विशातुम्, आशादृते जीवति सर्वलोकः ।
एतद् विचार्यैव मयापि तावद्, आशास्यतेऽग्रे सफलं निजेष्टम् ॥

(११)
सौख्यतायोग-विवृतिः, किं प्रदत्ता सर्वकाराय ? ।
कदा वा सर्वकारः, प्रकाशमिच्छति तामिति जिज्ञासे ॥

(१२)
स्वायि-लब्ध-सम्पन्नः, समासादितः श्रीमद्भिरिति ।
राजस्थात-पात्रिका, तो ज्ञात्वा मोमुधागरे बयम् ॥

(१३)
भ्यान् सप्तयोऽतीतः, श्रीमद्-दशत्रिभ्यः सपरिवशोऽहम् ।
वञ्चितोऽस्मीति साम्प्रति, कदा दर्शयि-दुर्जैरनुग्रहीष्यति ? ॥

(१४)
आशाखे चास्मदीयः पूज्य-भ्रातृचरणः स्वस्याः प्रसन्नाश्च ।
तत्-पादांशुयोश्चापि, कृपयाऽस्मन्तति-ततथो निर्वदनीयाः ॥



सेवा में श्री कुत परमका हेतु

प्रो० डॉ० सत्यव्रत शास्त्री जी

सी. 248,

डिपेंड का लान्नी,

नई दिल्ली

पिन PIN

110024

(इस लाइन के नीचे नहीं लिखें और नहीं मुद्रित करें Do not write or print below this line)

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

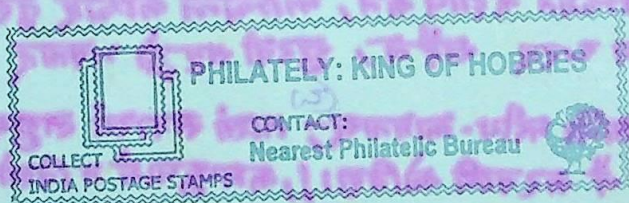
इस पत्र के अन्दर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

पिन PIN

--	--	--	--	--	--



यहाँ काट कर खोलें TO OPEN CUT HERE

— शुभकाम्य —

ऊनविंशो केसर, विहारे विद्या-वैभव-भवने ॐ ।
जगत्पुरारव्य-जयपुरे, वासी कोविद-कुल-किन्नरः ॥
स्वकीयमेवं हर्षे, निवेद्य शीघ्रतः सप्तसप्तमम् ।
मान्यः ! प्रणमन्निहैव, विरमति नारायण-कौन्तेयः ॥

११-११-२०१५

J. 28. (011) 24336644
24336631

C-248, DEFENCE COLONY,
NEW DELHI-110024.
(0. X1.2008.

(M) 09968211148

मान्या विद्वत्पुत्रः, सङ्गण्यं प्रणतम् ।

दीपानलि शुभाशंखा भवतिः केषिता मयि ।
उमन्वानन्दसन्दोहं मम विनो यजीजनम् ॥१॥
दीपकवर्धनं शुभं भूयान् हतेऽपि भवति किदम् ।
इत्थं हे शायसि प्रह्वं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥२॥
नाना प्रान्थ उणयने स्नाने व्याप्तोऽहम् इति शम् ।
गमयामि स्वयं नालं विशदेना न सदात्मना ॥३॥

J. No. (011) 24336644
24336631

C-248, DEFENCE COLONY,
NEW DELHI-110024.
(0, X1.2008.

(M) 09968211148

मान्या विद्वत्पुत्रः, स्वकण्यं प्रणतयः ।

दीपाकलि शुभाशंखा भवद्विः केषिता मयि ।
उमन्वानन्दसन्दोहं मम चित्ते यजीजनम् ॥१॥
दीपकवर् शुभं भूकाल इतेऽपि भवतमिदम् ।
इत्थं हे प्राथमे प्रह्वं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥२॥
नाना ग्रन्थ उपायने स्वयमेव व्याहृतोऽहम् इति शम् ।
वामयामि स्वयं कालं विशदेना न सदात्मना ॥३॥

एको नारी ली नया ५ हं
 न मे चागल्लरे रुपडा।
 सरस्वती पदा भोज -
 स्मरणं जीवितं मम ॥४॥
 शास्त्राण्यनन्त पारणि
 तद्रूपं नु वेदं कः।
 अक्षेक्षितानि स्रुः सत्यं
 नाना जन्मानि तत्कृते ॥५॥
 तदाङ्घ्रि तत्कृते यत्नः
 सत्यं कथलाविति।
 तत्र व्यापार रक्षाभ्येव
 मान्यं लु प्रियतरं मम ॥६॥
 शक्ति स्थापितं नयः
 भवत्स्नेहवशं वदस्म सत्यं तदाङ्घ्रि ॥

POST CARD
S.P.R. HYD. 2007



डा० उमाकान्त शर्मा,
 ब्रह्मानन्द मीड, प्रियंवदा वाटिका,
 604, राजय मार्ग, पटेल नगर
 मुजफ्फरनगर

पिन PIN

2	5	1	0	0	1
---	---	---	---	---	---

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

MUZAFFARNAGAR

(U.P.)

Mahamahopadhyaya Vidyavachaspati Vidyamartanda Prof. Dr. Satya Vrat Shastri

Recipient of Padma Shri & president of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res. : C-248, Defence Colony,
New Delhi-110 024

E-mail : satyavratshastri@airtelbroadband.in

Website : satyavrat-shastri.net

Ph. : 24336644, 24336631

(2.XI.2007)

डा. व. क. शास्त्री महोदय महाराजः
नवादील्ली स्थित राधिका संस्कृत संस्थान (नवादील्ली मिहिराबाद,
जानकपुरी,
नई दिल्ली-110058.

माननीय आचार्य महाराज।

प्रत्यक्षगामि मया काव्यसुलुक्वर्णनं नामकम् ।
पाठित्वाऽऽमूलचूलं च सूक्ष्मवृष्ट्या निरीक्षितम् ॥१॥
रुचिरं हृत्तः स्वयं प्रकाशितमपेक्षते ।
सम्पादक प्रयासोऽयं श्लाघनीयोऽस्ति वस्तुतः ॥२॥
एतन्मया प्रसादोस्तु वक्ष्ये कदाचित् ।
अहुशः प्रविलोक्यन्ते विश्वे ध्यातुस्तुऽऽमलतः ॥३॥
प्रकाशनायुदानार्थमेतन्निवेदयामासुः ।
अमुशं स्थाऽस्य भाव्यस्य सहस्रं प्रियते मया ॥४॥

इति निवेदनं

सत्यव्रत शास्त्री शिष्यः

J. No. (011) 24336644

24336631

(M) 09968211148

C-248, DEFENCE COLONY,

NEW DELHI-110024.

10. XI. 2008.

मानना विद्वत्पुत्रः

स प्रणम्य प्रणतः ।

दीपावलि शुभाशंखा भवतिः उपेक्षिता मयि ।

उमन्वानन्दसन्दोहं मम चित्ते व्यजीजनम् ॥१॥

दीपकवर्धनं भूकाल इत्येवमिदं भवति किदम् ।

इति है त्रापये प्रह्वं शङ्करं लोकशङ्करम् ॥२॥

मानना प्रणम्य प्रणतः स्मरते व्याहृतोऽहमहनिशम् ।

वामपामि स्वर्गं प्राप्तं विशदेना नरात्मना ॥३॥

एको नाशने लो वषा ५ हं
 मा मे धार्मिकले रूपेडा ।
 सरस्वती पदा भोजा -
 स्मरणं जीवितं मम ॥४॥
 शिरःत्रा पञ्चनल कारणि
 लक्ष्मणं नु वेद फेड ।
 अष्टके सिलानि स्फुटः सत्यं
 नाना जन्मानि लक्ष्मणे ॥५॥
 लक्ष्मणं लक्ष्मणे यत्नः
 ललत प्रचलति किति ।
 लक्ष्मणं लक्ष्मणे यत्नः
 मान्य लक्ष्मणं मम ॥६॥
 इति स्मार्तसिद्धिं नचः
 भवत्स्नेहवशं कदम्ब लक्ष्मणं लक्ष्मणे ॥

वे. प्र. / S.P.P., HYD. - 2007 पोस्ट कार्ड POST CARD



डा. उमाकांत शर्मा,
 डा. हार्द नीड, प्रियंवदा वाटिका,
 604, संजय मार्ग, पटेल नगर
 मुजफ्फर नगर

पिन PIN 251001

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

MUZAFFARNAGAR

(U.P.)

**Mahamahopadhyaya Vidyavachaspati Vidyamartanda
Prof. Dr. Satya Vrat Shastri`**

Recipient of Padma Shri & president of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res. : C-248, Defence Colony,
New Delhi-110 024

E-mail : satyavratshastri@airtelbroadband.in

Website : satyavrat-shastri.net

Ph. : 24336644, 24336631

(2. x1 2007,

३।० कुन्ना राया उडेय महाभारताः
 मन्नादेवली स्थ - रायपुत्र संस्थान निहायक निदेशिका ३,
 जमनापुरी,
 मई दिवली - ११००५४.

111111

पठित्वा ५५ मूलाचूलां च सूत्र-मनुष्यानां मेरीतश्च लभ्यते ॥२॥

राय रेफं दूतः कलः प्रकाशमपेक्षते।

सिपायान् उपायो ऽपि शलाघनीयो ऽस्ति वस्तुतः ॥२॥

ए. डी. पी. ए. दा. र. तु. म. ज्यो. हि. कदा बह.

अहु १३ प्राकिलोयानो दिशो दया प्रियः प्रफलनः ॥ ३॥

प्रकाशनामुदात्तमेतन्मिदं प्रकृतम्।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

शक्ति निवेदना

सत्य प्रताप शक्ति

Rec. C-248, Defence Colony,
New Delhi-110 024
E-mail: vachaspati@rediffmail.com
Website: vachaspati.org
Ph. 26208944, 26208927

Member of Indian Council of Social Sciences
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies,
Jawahar Education University,
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit,
University of Delhi,
Ex-officio Chancellor,
Sri Jagadgur, Shrikrishna University, Puri (Orissa)

जयपुरवास-ल योगेश्वर ३० मारच १९१७ लि -
भा. डू. रसदास गोस्वामी १ ई. २. २०० ट दिनाङ्क
प्रेषितं पत्रम्

मान्येभ्यः प्रणामः,

पञ्चेणामेन सञ्चकं धर्मपत्न्या सम्पन्नितम् |
संस्थितौ जीवनेदन्तं किंन्तवः प्रेष्यते मया ॥१॥
दाश्चिदंशोऽवशिष्टोऽत्र हर-लसौख्येन योजितः |
वङ्गणीनृत्यं तामपि प्रेषयिष्याम्यहं कृतम् ॥२॥
विलास्यं परिजिहीर्षुः सुखे येन वचः सन्धम् |
विन्यस्यामि पुणामं च भवत्यु किमिवेदके ॥३॥

श्रीमत्यु लिनः ५३

सत्याग्रहः शास्त्री

B. 54

1.69

115

Dr. Pr:
Trivandrum is spelled as
Thiruvananthapuram

other States where it is a casual phenomenon. It is not uncommon to come across there a good sprinkling of Christian and Muslim students studying Sanskrit along with their Hindu class fellows even in traditional institutions, the Gurukulas, Vidyalyas and what are called Sanskrit Colleges. It is a happy experience to see them specializing in such difficult branches of learning as Nyāya, Logic, Vedānta, Monistic philosophy and Sāhitya, Poetics that require a high degree of application and dedicated effort in learning the rather abstruse texts replete with technical jargon. A couple of students of these institutions have completed their studies and are now teaching Sanskrit in one institution or the other. There is one Kadija Bibi who did her M.A. with Sāhitya special from the Sanskrit College, Pattambi and is now teaching in the same institution after serving for a time in the Kendriya Sanskrit Vidyapitha, Pavaratti. A gentleman of the name of Puru Kannu is now a lecturer in the Govt. Sanskrit College, Trivandrum after having passed from the same institution M.A. with Nyāya special. He also worked for Ph.D. to work on the *Prasastapadabhāṣya*. Abdul Rahman, another gentleman like him is a lecturer in Sanskrit in Cochin College after having passed M.A. in Sanskrit with Sāhitya special with a First class First. In Kaladi, the birth place of Shankaracharya, a lady, Pathuma Bibi, who is just a house wife now, not serving anywhere did her M.A. with Vedānta special from the Govt. Sanskrit College, Trivandrum with a First class First. She did M. Phil. Another scholar matching Pathuma Bibi in brilliance is Zubaida Bibi who did her M.A. with Sāhitya special from the Govt. Sanskrit College, Trivandrum. She is now a lecturer in the Govt. Sanskrit College, Pattambi. The present Professor who till recently was also the Head of Department of Sanskrit at the Kerala University, Thiruvananthapuram is a Muslim Prof. Bashir Ahmad.

The writer of these lines had the opportunity of working in the two Universities of Bangkok, the Chulalongkorn University and the Silpakorn University from 1977-79 and 1998-91. In both of these he had a colleague each from the Muslim community, Dr. Mrs. Pranee Lapanich and Dr. Mrs. Kusuma Raksamani. Dr. Pranee is an M.A., Ph.D. from the University of Pennsylvania, Philadelphia and Dr. Kusuma, an M.A., Ph.D. from the University of Toronto, Toronto. For her M.A. Dissertation Dr. Pranee worked on the

Handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.

१ प्रयासि सौत्सुक्यममाः समुपागतोऽहं

प्रत्नां पुरीं स्वपदि चेन्न इनाम धेयाम् ।

१ प्राग्मेव देशविषयान् विबुधैर्निशेष -

शान्तिनाम्नितैः सह विमर्शविशेष उल्लेखः ॥ १ ॥

देशैरसीमि-रसमदं बहु खड्गदीप्तं

संलब्धं मेरुदेशमपि जीतो दैः ।

संरक्षितं न लुप्तं चारिष्येति च

दायोऽस्मदीय रति तच्छालि क्लृप्तमावैः ॥ २ ॥

भाषासु तत्र विपुलः किल शब्दराशिः

गीर्वाणगीर्वाण रति इत्यमं मनो नः ।

प्राग्मेवति इत्युदितं शब्द चरोति नोऽस्तौ

स्वयं स्तब्धीयमिति बहुयुग्मं इत्युच्यते ॥ ३ ॥

रामायणाद् विविधानि कथानामानि

नात्युपयोग उपयोगमुदाहरितः सन् ।

तत्र त्पलो न निवृत्तः बहुवचनपूर्वान्

चेतांस्ति रज्ज्-जपति रज्ज्-जपन कर्मदक्षः ॥ ४ ॥

दृश्यानि चार्थे विविधानि तथैव तस्माद्

रामायणाद् विविधरचितकलाउचीनाः ।

वस्त्रेषु चित्रमति चाष्टपदेषु चरिषि

पत्रेषु चरिषि चरिदृक्कलेषु चरिषि ॥ ५ ॥

सौ रागिनाम् विविधानि कथानामानि

वाचा स्वयं पठति तत्र जनेऽभिरुच्यते ।

श्रद्धामरेण भरितं सुखशान्तिकामो

देवालयेषु गमनं च चरोति तत्र ॥ ६ ॥

पूजादि चरति तत्र विशेषमत्त्या

पुष्पादि चार्थमपि चरिष्यते स्वनामम् ।

स्वयं स्वयं चरति स्वयं स्वयं चरति स्वयं स्वयं चरति

शेमां कीदृक् च इत्युच्यते स्वयं स्वयं चरति

३२ विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

३३ विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय

॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय

॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय

॥३॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
विष्णुपुत्रः शम्भुपुत्रः विष्णुपुत्रः
[संस्कृतमन्त्र] नमो भगवते वासुदेवाय

प्राज्ञो जाना इह पुरातन कौक्षधर्म -

मिहिलाम धर्मन वि वा समुपाश्रयान्ति ।

अथ लप स्वयं यजन्ता इ वि वा हि नृधर्म

अथादरा यजनयो रयम प्रयान्ति ॥ ८ ॥

धर्म उकारकवरी सममि उपनन्ताः

केचि ज्युनः स्वमयदाय पुराणधर्मम् ।

प्रीतिहेतुलनममि उपनन्ता विधर्म

तत्पालने इह वि यः अभिजोष्य मानाः ॥ ९ ॥

प्रतिष्ठापनार्थं तं विष्णुं प्रकृतं वि
शेषं विष्णुं तं विष्णुं प्रकृतं वि
॥ ३ ॥ विष्णुं तं विष्णुं प्रकृतं वि
ः सत्त्वगुणैश्च तं विष्णुं प्रकृतं वि

प्रतिष्ठापनार्थं तं विष्णुं प्रकृतं वि
विष्णुं तं विष्णुं प्रकृतं वि
॥ ३ ॥ विष्णुं तं विष्णुं प्रकृतं वि

12. 12. 2006
12. 12. 2007

दिनांक ११ दिसम्बर २००७ ई. ज्ञान प्रकाशन विभाग स्व. हाथ-२-

मुद्रास्वचिन्ता ५० प्रकाशपाठे महाभागान् प्रलि प्रोक्षितं यम् २५१

मान्यः,

जयन्त भारती ।

अथ द्वात्रिंशति मया भाष्यमुत्पन्नं नामकम् ।

पठित्वा ५५ मूलचूलां च सूक्ष्मदृष्ट्या निरीक्षितम् ॥ १ ॥

एतद्विषयं धृष्टं तिष्ठत्यस्य प्रकाशनात्पेक्षते ।

सम्पादनं प्रयासोऽत्र श्लाघनीयोऽस्ति वस्तुतः ॥ २ ॥

दृष्ट्वा च प्रसादात् ननु यो दुःखदा इह ।

मनुशः प्रवेष्टोऽन्यन्ते शोच्यते न्युः प्रकृतम् ॥ ३ ॥

प्रकाशना नुदात्ता भिल्लिदेशापूर्वकम् ।

अनुशंसोऽस्य भाष्यस्य सङ्घर्षः क्रियते मया ॥ ४ ॥

शाली निवेदना —

स्वत्यत्र २१.१२.०७

Gangotri through Hardwar, Rishikesh and Uttarakashi, the *Kaśmīraviharaṇa*⁵⁸ of Chuni Lal Sudan which describes his travels through Kashmir, the *Apaścimaḥ Paścime*⁵⁹ of Vishwasa which gives on account of his travels through America and the *Pāścātyasaṁskṛtam*⁶⁰ of Digambara Mahapatra which gives a record of his travels in Holland and Russia.

Besides the above, there are a few works in modern Sanskrit prose which deal with miscellaneous subjects like the *Svasthavṛtta*⁶¹ of Vedananda Vedavagisha which deal with health and longevity, the *Vipanmitram Patram*⁶² of Śhankāralal Maheshwar which in the form of an imaginary long letter describes the qualities and the role of a friend, the *Vaidehīvivāha*⁶³ of K.S. Krishnamurti Sastri, a long narrative on the Rāmāyaṇic episode of the marriage of Sītā, the *Sāhityamañjarī*⁶⁴ a compilation of literary essays by Batuk Nath Shastri Khiste and the *Atithidevo bhava*,⁶⁵ a treatise on guests and hospitality by M.P. Degvekar.

The Sanskrit prose in modern Sanskrit works, in spite of the hold of tradition on it in some cases, is unmistakably showing signs of qualitative change. With a few exceptions it is more easy and relaxed now. With all the inverted commas, single and double, dashes and dots it has started wearing a new look. The dialogues appear in it in lines, one succeeding the other without the names of the speakers after their initial appearance once. The movement of the narrative is more quick and direct. The vocabulary has a large dose of new coinages and words of foreign origin or their loan translations. The story, though getting smaller, is still far short of what goes by the name of mini story in western literature. By the very spirit of the Sanskrit literature the crime thrillers have dared not make their appearance in it.

It is time a thorough review of the modern Sanskrit prose literature is taken in hand, a task possible of accomplishment by a band of devoted scholars. That alone will give a complete idea of it which even by a conservative estimate may run into a couple of thousands of pages in print.

The modern Sanskrit prose has shown great promise to forge ahead. It is to be hoped that the coming century will add more

variety to it and strengthen it with new structures and innovations. For that it has sound foundations already, a galaxy of eminent writers having laid it. It has had a glorious past and there is no reason as to why it should not have a glorious future.

REFERENCES

1. Published by the author, Calcutta, Samvat 2025.
2. *ibid.* Samvat 1991.
3. Eastern Book Linkers, Delhi, 1988.
4. Published by B. K. Shastri, Banaras, 1947.
5. Published by the author, Delhi, 1961.
6. Devabharati Prakashan, Allahabad, Samvat 2020 (A.D. 1962).
7. Pracya Vidya Akademi, Devaprayag, 1981.
8. Mayank Prakashan, Kankhal (Hardwar), 1994.
9. *ibid.* 1997.
10. Lokabhasha Prachar Samiti, Puri, 1983.
11. *ibid.* 1984.
12. Devavani Parishad, New Delhi, 1988.
13. Lokabhasha Prachar Samiti, Puri, 1990.
14. *ibid.* 1990.
15. *ibid.*
16. *ibid.* 1994.
17. *ibid.*
18. Published by the author, Naleti, Disstt. Kangra, 1987.
19. *ibid.* 1991.
20. Published by Shrinath Shripad Hasurkar, Neemuch, 1982.
21. Sarvabhauma Sanskrit Prachar Sansthan, Varanasi, 1986.
22. Nag Publishers, Delhi, 1987.
23. Published by the author, Pune, 1999.
24. Pandeya Prakashan, Jaipur, 1999.
25. Surya Prakashan, Delhi, 1991.
26. National Publishing House, Delhi, 1970.
27. Published by the author, Khakra (Meerut), 1987.
28. *ibid.*, 1999.
29. Vajrayanta Prakashan, Allahabad, 1986.
30. Rajasthan Sanskrit Akademi, Jaipur, 1987.
31. Published by the author, Jaipur, 1987.
32. Published by the author, Varanasi, 1988.

12. 12. 17. 2006

(12) 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

12. 12. 17. 2006

संस्कृत-विश्व-कोश-प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०

प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०

प्रकाशक-संस्थानम्

संस्कृत-विश्व-कोश-प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०
प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०

संस्कृत-विश्व-कोश-प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०
प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०

संस्कृत-विश्व-कोश-प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०
प्रकाशक-संस्थानम्
वाराणसी-१०

दूरभाष - 24336644 }
 24336631 }
 चलदूरभाष - 9968211148

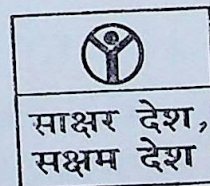
सी-248, डिपेंस कालोनी
 नई दिल्ली - 110024
 10. 4. 2008

(प्रियेभ्यः स्वास्ति।)

वैकुण्ठशुभाशंखाः समवाप्य मनोहराः।
 प्रानन्दो मे महाप्रजालः स्वयं नान्दाम बनेच २३॥१॥
 नकाव्योऽयं शुभो भूयात्तुलेऽपि भवतामिति।
 प्रार्थये प्राणजालिः प्रह्वः परमात्मानमव्याम ॥२॥
 क्वचि शान्तिः सुखीसुखी
 श्रीः इति न च विवृष्टिर्मेतु।
 मुनिकुपयस्मि भवेच्च वृष्टिः

क्वचि पूजां जमलां च वृष्टिः।
 (वृष्टिः = किङ्कान)
 विवेकभावकस्य भवेच्च वृष्टिः।
 (वृष्टिः = मार्जानम्)
 प्रनिष्ठितकस्य भवेच्च वृष्टिः।
 वृष्टिः = वृष्टिनाम्, रूप
 रिष्टिः (वृष्टिनाम्)
 इत्येव तावन्मम चेतसीष्टिः।
 (इष्टिः = इच्छा)
 शुभेच्छुः
 सत्यप्रतः

प्रभु/ISPP, MYD- 2007 पोस्ट कार्ड POST CARD



साक्षर देश,
सक्षम देश

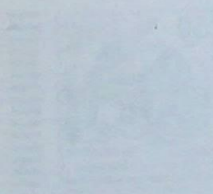


डा० वृष्णा लाल जी,
 "विश्वमीड" ई-टि ३६,
 E-937,
 सरस्वती विहार
 दिल्ली
 पिन PIN 110034

(इस लाइन के नीचे न तो लिखें और न ही मुद्रित करें Do not write or print below this line)

1. $\frac{1}{2} + \frac{1}{3} = \frac{3}{6} + \frac{2}{6} = \frac{5}{6}$
 2. $\frac{1}{4} + \frac{1}{5} = \frac{5}{20} + \frac{4}{20} = \frac{9}{20}$
 3. $\frac{1}{6} + \frac{1}{8} = \frac{4}{24} + \frac{3}{24} = \frac{7}{24}$

4. $\frac{1}{10} + \frac{1}{12} = \frac{6}{60} + \frac{5}{60} = \frac{11}{60}$
 5. $\frac{1}{15} + \frac{1}{18} = \frac{4}{36} + \frac{2}{36} = \frac{6}{36} = \frac{1}{6}$
 6. $\frac{1}{20} + \frac{1}{25} = \frac{5}{100} + \frac{4}{100} = \frac{9}{100}$
 7. $\frac{1}{30} + \frac{1}{35} = \frac{7}{210} + \frac{6}{210} = \frac{13}{210}$
 8. $\frac{1}{40} + \frac{1}{45} = \frac{9}{360} + \frac{8}{360} = \frac{17}{360}$
 9. $\frac{1}{50} + \frac{1}{60} = \frac{6}{300} + \frac{5}{300} = \frac{11}{300}$
 10. $\frac{1}{60} + \frac{1}{70} = \frac{7}{420} + \frac{6}{420} = \frac{13}{420}$



Nanaji Deshmukh Library,
 BJP, Jammu

1. $\frac{1}{2} + \frac{1}{3} = \frac{5}{6}$
 2. $\frac{1}{4} + \frac{1}{5} = \frac{9}{20}$
 3. $\frac{1}{6} + \frac{1}{8} = \frac{7}{24}$
 4. $\frac{1}{10} + \frac{1}{12} = \frac{11}{60}$
 5. $\frac{1}{15} + \frac{1}{18} = \frac{1}{6}$
 6. $\frac{1}{20} + \frac{1}{25} = \frac{9}{100}$
 7. $\frac{1}{30} + \frac{1}{35} = \frac{13}{210}$
 8. $\frac{1}{40} + \frac{1}{45} = \frac{17}{360}$
 9. $\frac{1}{50} + \frac{1}{60} = \frac{11}{300}$
 10. $\frac{1}{60} + \frac{1}{70} = \frac{13}{420}$

**Mahamahopadhyaya Vidyavachaspati Vidyamartanda
Prof. Dr. Satya Vrat Shastri`**

Recipient of Padma Shri & president of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res. : C-248, Defence Colony,
New Delhi-110 024

E-mail : satyavratshastri@airtelbroadband.in

Website : satyavrat-shastri.net

Ph. : 24336644, 24336631

क्रिया ५१० इन्द्र भोऽनसि इमहाभगाः,
सहस्रेतापि यः।

अनुतिथि रक्तया द्वाभ्यां
वृत्तिनामां चोत्तिथिनामां च

शिलायामिति स्मारकम्

गोविन्दपदार्थिके ११. ८५ वर्ये २०-१०-११।

मायि इच्छे तस्मिन् साधनाय लं भूतिशो जयि

न व सिद्धिर्वाप्तं अलं लेखिजं न लेखं न च लेखं न च लेखं न च लेखं

ਸੀ ਤੇ ਸਾਧਾ ਜੀ ॥੧॥

इति मनसि महान् मे गच्छति संसारी विवादे

है गुणित राशि

१. साहजिक
 २. साहजिक
 ३. साहजिक

न च दधेयते इति लक्षणा प्रत्ययः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मरिच म

२५-६ म ति मे दी ये रि सु नि सुं पं मु नी

पता ५-एचआर गुरुनगर रोड इन्डिया पोस्ट ऑफिस
कलकत्ता-७

कथं प्रकृतं मन्त्रं न कथं

विद्ये विना साक्षात् इति चेत् त्रयं च ॥ ३ ॥

हृदं निष्करो ५ पितृ

१५ मा - य-रा-त-त्ताम् ३ फ ला २५ ए

18.11.2025 (Friday) 11.11.2025

ਨਾ ਲਾਭੀਯੋ ਕਾ ਫਾਹੇ ਰਾਧੇ ਸੇਸ
ਫੁੱਲ ਲਾ ਓਹੋਯਾਫੇ ਮਾਯੇ ਕਾ ਫਾਹੇ

०५ सौ/करा ३३ मिहेंडमरव' मिज'

Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Kazuo Arai
Ryōga Arai Shuns
Parajit Kurōki
Mitsuo Takah
Shunzo Kuroki

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitised By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अशीवदिह. च दशी

3. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 841. 842. 843. 844. 845

मिने फुल्लु धोले लल्लु गुल्लु मार दिवो मालो ॥ १

ਭਾਗੀ ਚੰਦਰ ਸੁਣਨ ਲਈ ਮਾਰੀ ਕੀਤੀ ਹੈ।

वर्गिकं चतुर्विधं शेषमच्यते॥ एते चतुर्विधे चतुर्विधाः ॥ १। व्यसृज्यते ॥ २॥

[illegible]

नि दश लोकोपात्ता यवियु दो विलिखणा ॥ ३ ॥
मो र वास पाण्ड कर च। हि ते पउरे २ ६ ६

मो र वांर पाउस कर-च। मि दे पाये जे ^{है}
पुछा पाया सचरी न हो - ^{जि}

५६५ दादा सावरकरांच्या हस्ताक्षरांच्या २३ व्या वर्षी ॥ ४॥

इष्टं मन्त्रं यः वेदो न वेद साधुः ॥ १४ ॥
परिचयः ॥ यद्यपि मन्त्रो वेदो न वेद साधुः ॥

परिचयः ॥ ५ ॥

म व लो यो ह मि च्छामि तदमुं कुरु च्छामि ॥
भीमसुतं कुरु च्छामि तदमुं कुरु च्छामि ॥

मी लाल-लं इत्युक्तोच्यते नैव सं च दृष्टिः पश्यति॥ ६॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णार्चनम् ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

तो लक्ष्मी देवता के चरणों में अर्पित करने का प्रार्थना है।

[illegible]

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$

[illegible]

लं गानुभोदे मा तसि ५२६ दू हं शीत लं चक्रा मा गुणम् ॥ ८ ॥

एक रक्षाशि का 5 कोटि प्रतिवर्षे रक्षितो 500 करोड ॥
 रक्षाशि का मे न मा हा लायें लक्ष्मी का मे न मा हा लायें ॥

१) प्रथम विचार के लिये प्रत्येक व्यक्ति को एक पत्रिका देनी चाहिए।

५१५ वि. ५१५
एलादेन स्व. ५१५

एला के नमूने का नाम है S. (निम्न) डी. (निम्न) योर्गन है : ॥ ११४ ॥

प्राप्त करवाया जाय।

गोपबन्धनस्य ह्येति निर्दिष्टं कृतं ॥ १२ ॥

मामा १२ वर्ष के लार इमे लोक पुनि शु ताठ।
१२ वर्ष के लार इमे लोक पुनि शु ताठ।

[illegible]

मोक्षमार्गिका वादिके ५ वें लेख में निरूपित मन्त्रों का दस्तावेज है।

१५०० मंदा (२४) ॥ १६०० ॥
 १७०० मंदा (२४) ॥ १८०० ॥

१५०० मं. १९८०
१५०० मं. १९८०

स्वतंत्रता के लिए लड़ना ही हमारा कर्तव्य है।

1/1/11 5/11 11/11 1/11

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रुपये १११५७३

SHASTRI/SATYAVRAT MR 02MAY JAI DEL

ELECTRONIC TICKET

PASSENGER ITINERARY RECEIPT

MARVEL TRIP LTD DATE: 15 APR 2016
 MARVEL HOUSE 19, SECTOR AGENT: 2910
 NEAR HUDA METRO STATION NAME: SHASTRI/SATYAVRAT MR
 GURGAON - 122003 IATA : 143 14075
 TELEPHONE : +917428851003

ISSUING AIRLINE : AIR INDIA LIMITED
 TICKET NUMBER : ETKT 098 1725563572

BOOKING REF : AMADEUS: 4SYMKH, AIRLINE: AI/JXR35

| FROM /TO | FLIGHT | CL | DATE | DEP | FARE BASIS | NVB | NVA | BAG | ST |
|----------|--------|----|-------|------|------------|-----|-------|-------|--------|
| JAI PUR | AI 492 | T | 02MAY | 1605 | TAP14 | | 02MAY | 02MAY | 25K OK |

INTERNATIONAL TERMINAL:2

DELHI INDIRA ARRIVAL TIME: 1655 ARRIVAL DATE: 02MAY

GANDHI INTL TERMINAL:3 LATEST CHECK-IN:1520

AT CHECK-IN, PLEASE SHOW A PICTURE IDENTIFICATION AND THE DOCUMENT YOU GAVE
 FOR REFERENCE AT RESERVATION TIME

ENDORSEMENTS : NON ENDORSABLE/ CHANGE/ REFUND/ NO-SHOW FEE APPL PER SECTOR.

| | | | | | | |
|----------|-------|------|-------|-------|-----|-------|
| AIR FARE | : INR | 2250 | | | | |
| TAX | : INR | 98JN | INR | 150IN | INR | 238IN |
| | | INR | 238WO | INR | 4F2 | |
| TOTAL | : INR | 2978 | | | | |

FLIGHT(S) CALCULATED AVERAGE CO2 EMISSIONS IS 35.00 KG/PERSON

SOURCE: ICAO CARBON EMISSIONS CALCULATOR

[HTTP://WWW.ICAO.INT/ENVIRONMENTAL-PROTECTION/CARBONOFFSET/PAGES/DEFAULT.ASPX](http://www.icao.int/environmental-protection/carbonoffset/pages/default.aspx)

NOTICE

CARRIAGE AND OTHER SERVICES PROVIDED BY THE CARRIER ARE SUBJECT TO CONDITIONS
 OF CARRIAGE, WHICH ARE HEREBY INCORPORATED BY REFERENCE. THESE CONDITIONS MAY
 BE OBTAINED FROM THE ISSUING CARRIER.

THE ITINERARY/RECEIPT CONSTITUTES THE PASSENGER TICKET FOR THE PURPOSES OF
 ARTICLE 3 OF THE WARSAW CONVENTION, EXCEPT WHERE THE CARRIER DELIVERS TO THE
 PASSENGER ANOTHER DOCUMENT COMPLYING WITH THE REQUIREMENTS OF

14000
 14000
 2000
 35000
 250
 140
 10000
 250
 215000

शुभ्रां लैका दशी

मानसोऽयं महोकाऽयं श्री नारायण भाङ्ग रेः ।
 ॥ १ ॥
 ॥ २ ॥
 ॥ ३ ॥
 ॥ ४ ॥
 ॥ ५ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ७ ॥
 ॥ ८ ॥
 ॥ ९ ॥
 ॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥

अष्टमाक्षी निवासः

५१५५२२

२८.०४.२०१६

अष्टमस्तुतुग्रा मै गुरुगिनां सुमयस्तुतु

तथा ^{न्या} ~~दश~~ श्रिका विद्या श्री नारायण त्रयद्विगणः ।

National Mission for Manuscripts

National Mission for Manuscripts, was brought into existence on 5th February 2003 by the Ministry of Culture, Government of India.

40.58 Manuscripts have been documented (catalogued/listed) by 55 Manuscripts Resource Centers (MRC) across the country and indexes of 31.23 lakh Manuscripts have been uploaded on the NMM website. It is estimated that there are around 1 Crore Manuscripts available in the country

NMM has completed preventive conservation of 5.05 lakh manuscripts (117.84 lakhs folios) and curative conservation of 1.44 lakh manuscripts (35 lakhs folios) through 50 Manuscript Conservation Centers (MCC). Training is also provided through workshops held throughout the country.

NMM is engaged in creation of resource pool of manpower in Manuscriptology and Paleography by organizing workshops to provide training in reading and writing old scripts.

Recipient of Padma Bhushan, Padma Shri & President of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res. : C-248, Defence Colony,
New Delhi - 110 024
E-mail : satyavratshastri@airtelmail.in
Website : satyavrat-shastri.net
Ph. : 24336644, 24336631
Mobile : 96501 17463

७.०५.२०१६

शुभाशुभां लोकां च दृष्ट्वा

त्रि वेणीति स्म काल्याणं मुपन्यासं सुधी नरैः ।
म हेशमौलमा मिरव्यै रचितां सुमनो हरम् ॥ १ ॥
अलाङ्कुरै रनु प्रास यमको त्रेक्षोपमादि मिः ।
अलाङ्कृतं, गुणौ चैश्च प्रलादादि मिश्रं ललम् ॥ २ ॥
पाठं पाठं न मे तृप्तिर्जायते सुमनो हरम् ।
वैलक्षण्यं किमप्यस्य यद्वि वाचामगोचरम् ॥ ३ ॥
रम्योऽस्ति पदवन्द्योऽत्र रम्या शैली च मोददा ।
रम्यश्च वन्द्यो विषयः स्तुतिरम्यमिदं स्तुतम् ॥ ४ ॥
नानाऽत्र विषयाः स्तुता अत्र हृष्टाः पूर्वस्मिन् मिः ।
मूलानां मूलये ये ह्युपनिषन्वन्मोद च ॥ ५ ॥
अथैव रमणीयस्य यो भवेत्प्रतिपादकः ।
तं शब्दं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं ॥ ६ ॥
वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं वाच्यं ॥ ७ ॥
मवेति त्वय नानुत्पन्नं सन्दर्भं शब्दं च ॥ ८ ॥
द्वन्द्वः प्रयोगविधुरे लायादि रटिले सन्ध्याः ।
वाच्ये वाच्येन सन्ध्याः कवीनां निष्कपेरेति ॥ ९ ॥
कथेति पूर्वमाख्याता सुधैराख्यायिकेति वा ।
वा, लास्या मूलं रूपमुपन्यासं प्रचक्षते ॥ १० ॥
विवेकीति समस्तानां सुधैरं सुधैरं सुधैरं ॥ ११ ॥
राचिन्ते ल उपन्यासश्चिन्तयेणीत्येवमत्र ॥ १२ ॥
उपन्यासेषु यदुक्तं यो राजानोऽपि ॥ १३ ॥
शुभाशुभां लोकां च दृष्ट्वा सुधी नरैः ॥ १४ ॥

नो मे वनं विमोहादे वाचं लुप्यन्ति चोदिराड।

श्री मे लार प्रताप लल्लु हेतु रूपा उरी र्फ ते ॥ ११ ॥

लला-लप्योति तं वाचं लुप्यन्ति मित्रं सुखं हृष्टमिति।

उप-लप्योति ३ मनेन न वल्लभं २ लो-लप्येन धीमताम् ॥ १२ ॥

गामो-लप्योति लारु लुप्यन्ति वि-लप्यन्ति।

मो-लप्योति लल्लु हेतु रूपा उरी र्फ ते ॥ १३ ॥

लला-लप्योति तं वाचं लुप्यन्ति मित्रं सुखं हृष्टमिति ॥ १४ ॥

उप-लप्योति ३ मनेन न वल्लभं २ लो-लप्येन धीमताम् ॥ १५ ॥

श्री मे लार प्रताप लल्लु हेतु रूपा उरी र्फ ते ॥ १६ ॥

लला-लप्योति तं वाचं लुप्यन्ति मित्रं सुखं हृष्टमिति ॥ १७ ॥

उप-लप्योति ३ मनेन न वल्लभं २ लो-लप्येन धीमताम् ॥ १८ ॥

गामो-लप्योति लारु लुप्यन्ति वि-लप्यन्ति ॥ १९ ॥

लला-लप्योति तं वाचं लुप्यन्ति मित्रं सुखं हृष्टमिति ॥ २० ॥

नानादेवली

६.०५.२०१५

(वंशशेखरतुलाम्)

प्रजाजानानां सखा लोच्यता स्तली

हितायै, लोकसखतामुपेक्ष्यी।

विभूतयेति सख्युत्पत्तिः समुज्ज्वलैः

शतं समाजीन सुखं श्रियो दरा ॥

यशो दरायां विमलं विभासतां

निरन्तरा शास्त्ररुचिः समोदताम्।

सहस्रशमेरिव ते दिवानिशं

प्रचण्डतेजः प्रसरः प्रकाशताम् ॥

इति शुभाशंखा

सत्यव्रत शास्त्रिणा

in:sent

[Click here to enable desktop notifi](#)[Move to Inbox](#)

Gmail

COMPOSE

Forbes.com: Most popular stories - How To Send Your Best Employees To Your

Inbox (101)

Starred

Important

Sent Mail

Drafts

Circles

General Correspond...

Notification E Mail Ch...



Search people...

Invitations

(1/2)



shardakant.vcci
@gmail.com wants to
be able to chat with
you. Okay?

yes

no

Upendra Rao



Request for a write-up for Report.



Dr Satya Vrat Shastri <drsatyavratshastri@gmail.com>

to Shashi

My dear Professor Shashiprabha Kumar,

We have to start working on the Report now. I would be obliged if you kin
present state now, what new areas it needs to cover, what improvements
February, 2015. We propose to submit the Report by the end of February.

With regards,
Yours Sincerely,
Satya Vrat Shastri

Click here to [Reply](#) or [Forward](#)